INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 7 | AUGUST - 2021

भारतीय नारी की अवधारणा स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में

प्रा. प्रमोद किशनराम घन
सहाय्यक प्राध्यापक एवं विभाग प्रमुख, हिंदी
तोष्णीवाल महाविद्यालय, सेनगाव जिल्हा हिंगोली.

सारांश:

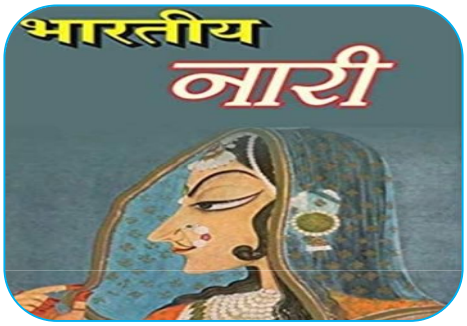

स्वतंत्रता के बाद नारी के अस्तित्व की अनुभूतिए सामाजिक अराजकताए नैतिक उथल.पुथलए खोखलापनए उदासीनताए निराशा और निराशाए घृणाए नए मूल्यों को साहित्य में चित्रित किया गया है। परम्परागत सामाजिक मूल्यों को नकारते हुए काल के उपन्यासों ने भारतीय जीवन में आधुनिकीकरण के बदलते परिवेश के साथ मानवीय संबंधों के विकृत रूप को चित्रित किया है। स्वतन्त्रता के बाद उपन्यासकारों ने नारी व्यक्तित्व के निर्माण में मूलभूत प्रवृत्तियों के महत्व को स्वीकार करते हुए अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ति में सामाजिक मान्यताओं की विसंगतियों और विसंगतियों पर विचार करके रूढ़िवादी परंपराओं के खिलाफ विरोध और आक्रोश पैदा किया है। महिलाओं की दुनिया को बेहतर बनाने के लिए काल्पनिक लेखकों का लेखन एक सराहनीय प्रयास है।

परिचय:

महिलाओं ने हमारी संस्कृति, धर्म और सभ्यता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नारी आदिम सभ्यता की पालना है। नारी पुरुष की प्रेरणा है और पुरुष संघर्ष का प्रतीक। प्रेरणा और संघर्ष का मेल ही संपूर्ण जीवन है। नर और नारी सृष्टि के दो मूल तत्व हैं। महात्मा गांधी ने कहा था, ष्किसी महिला को ईशनिंदा कहना उसका अपमान है।ष यदि शक्ति सांसारिक शक्ति है, तो स्त्री वास्तव में पुरुष से कम शक्तिशाली है। यदि शक्ति का अर्थ नैतिक शक्ति है, तो स्त्री पुरुष से अधिक शक्तिशाली है।स्त्री शब्द का प्रयोग आज कथा साहित्य में खुलेआम किया जाता है। स्त्री शब्द को हिंदी में और विशेष रूप से कथा साहित्य में पूरी तरह से अवशोषित और विस्थापित कर दिया गया है। सभ्यता और संस्कृति के शुरुआती दिनों में महिलाओं को गर्व का स्थान प्राप्त था। प्रारंभिक दिनों में महिलाओं की मातृसत्ता के कारण आविष्कार शीर्ष पर था। वैदिक काल में महिलाएं शिक्षित और स्वतंत्र थी और सभी कार्यों में उनकी हिस्सेदारी थी। नारी को समाज में सम्मान का स्थान प्राप्त था। महिलाओं का पतन उत्तर वैदिक काल में शुरू हुआ। स्त्री का स्थान घर तक ही सीमित था और वह पुरुष की अधीन हो गई। उपनिषदों और सूत्रों के समय तक, महिलाओं की स्थिति और खराब हो गई। महाकाव्य काल तक महिलाओं को देवी और राक्षसों में विभाजित

किया गया था। जैन और बधाई के बीच के काल में महिलाओं की स्थिति में कुछ सुधार हुआ, लेकिन यह अस्थायी था। मध्ययुगीन काल के दौरान, मुस्लिम आक्रमणों ने महिलाओं को चारदीवारी के भीतर कैद कर दिया। महिलाओं की सुरक्षा के नाम पर उन्हें इस कदर बेड़ियों में जकड़ा गया है कि उनका स्वतंत्र अस्तित्व अब पता नहीं चल रहा है. मध्यकालीन साहित्य में संत कवि कबीर ने स्त्री को माया का प्रतिरूप माना है, जबकि स्वयं को स्त्री मानकर अपने आध्यात्मिक प्रतीकों के माध्यम से प्रेम का इजहार किया है। मध्य युग के दौरान, महिलाओं की स्थिति दयनीय थी और महिलाओं को पुरुषों के अधीन दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता था। रीतिकाल के कवियों ने नारी के कामुक सौन्दर्य का ही चित्रण किया है। भारतेन्दु ने उन्हें विलास की लाल भुजाओं से निकाल कर सार्वजनिक जीवन के राजपथ पर पहुँचाया। सदियों की गुलामी के बाद आधुनिक काल में नारी का उदय हुआ। इसका कारण आधुनिक समय में समाज सुधारकों की भूमिका थी। समाज सुधारकों के कारण, महिलाएं जागरूक हुईं और समाज के पारंपरिक संकीर्ण दृष्टिकोणों को तोड़ते हुए अपने अस्तित्व और व्यक्तित्व पर जोर देने के लिए घर से बाहर निकलीं।

स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में भारतिय नारी:

सीमित होने का कोई रास्ता नहीं था, लेकिन स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में भारी बदलाव आया। यह महिला पुनर्जागरण का दूसरा चरण है। 'हिंदू कोड बिल' ने भारतीय महिला को आर्थिक, सामाजिक और नैतिक भेदभाव से मुक्त किया और उसे अपने अधिकारों के लिए सचेत रूप से लड़ने के लिए मजबूर किया। स्वतंत्रता संग्राम ने महिलाओं को सार्वजनिक क्षेत्र में मजबूर कर दिया। सामाजिक रूप से अयोग्य होने के बावजूद यह महिला घर की चारदीवारी से बाहर निकली। इस तरह नारी सही मायने में समाज के सामने आई। आजादी के बाद पारंपरिक वैवाहिक मान्यताओं में बदलाव आया। अब अंतर्जातीय विवाह हो रहे हैं। आजादी के बाद के माहौल में बदलाव ने भारतीय परिवार की संरचना में एक बड़ा बदलाव लाया। नई और पुरानी पीढ़ी के बीच संघर्ष उभरने लगा। 'पिता' कहानी पिता और पुत्र के बीच के संघर्ष को दर्शाती है। पुरानी पीढ़ी के लिए सम्मान और श्रद्धा के मूल्य घट रहे हैं और बड़ों के प्रति आक्रोश पैदा हो गया है। स्वतंत्रता के बाद हिन्दी उपन्यासों में नारी को अबला, सत्त्व और देवत्व के रूप में प्रस्तुत किया गया। स्त्री और पुरुष दोनों को समान अधिकार प्राप्त थे। स्वतंत्रता की भावना के साथ, जीवन के व्यक्तिवादी दर्शन ने संयुक्त परिवार प्रणाली को तोड़ दिया और मनुष्य को छोटे परिवार में ले गया। अमृतलाल नागर मानवतावादी उपन्यासकार हैं। वह प्रेम को घृणा, उत्थान को पतन और सृजन को विनाश को तरजीह देता है।

बदून और सागर के जंगलों को चाहने के बावजूद सज्जन का विरोध करते हुए अमृतलाल नागर 'बूंद और समुद्र' में विवाहित जीवन को चित्रित करते हुए कहते हैं, 'हमारे प्यार के आगे क्या है, समाज भौबिजष। प्यार एक महान चीज है, तो क्यों कोई भौतिक सुख की लालसा करता है?' नागरजी ने इस उपन्यास में जीवन की वास्तविकता को उकेरा है। 'वाटिका' नागर जी की प्रक्रियात्मक कहानियों का संग्रह है। 'प्रयाशचित' और 'तुलना' कहानियों में आदर्श स्त्रीत्व का विचार आया है। समाज के सामंती मानदंडों पर हमला करते हुए, 'प्रयाशचित्त' का महिलाओं के कल्याण के लिए एक मजबूत एजेंडा है।

इलचंद्र जोशी का नाम हिन्दी जगत में उल्लेखनीय है। वह समाज के दृष्टिकोण से महिलाओं के मनोविज्ञान को उदारतापूर्वक और सहक्रियात्मक रूप से चित्रित करती है। 'लज्जा' उपन्यास में लज्जा स्त्री की आंतरिक भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती है। इलचंद्र जोशी के उपन्यासों का उद्देश्य महिलाओं के पारंपरिक पिछड़े दृष्टिकोण या मध्ययुगीन धारणा का खंडन करके एक आधुनिक संवेदनशीलता स्थापित करना है। इसीलिए जोशी जी ने हिन्दी साहित्य में नारी के दृष्टिकोण को विविध रूपों में प्रस्तुत किया है। 'महिलाओं के बिना साहित्य अकल्पनीय है क्योंकि प्रेमचंद ने भी पुरुषों और महिलाओं के इस विश्व चक्र को दो समान सहकारी आंदोलनों के रूप में स्वीकार किया है।' उनके उल्लेखनीय उपन्यास 'ऋतुचक्र', 'मुक्तिपथ', 'जिप्सी', 'सुबह के भूले', 'निर्वासित' हैं। उनकी कहानी 'सरदार' अपर्णा की कहानी बताती है, एक बच्ची जिसे अपने पिता की गलतियों का परिणाम भुगतना पड़ता है। 'थोथ विवाह की पत्नी' एक बेमेल शादी और

इससे पैदा होने वाली जटिलताओं और एक महिला की असंतुलित मानसिक स्थिति की कहानी बताती है। 'परित्यक्ता' एक ऐसी पत्नी की कहानी है जिसे उसकी कुरूपता के कारण खारिज कर दिया जाता है। जोशी ने 'परिणीता', 'बदला', 'रात्रिचर', 'उद्धार' कहानियों में नारी की मानसिकता को प्रस्तुत किया है।

मोहन-राकेश की रचनाओं में नारी वेदना के चित्र दिखाई देते हैं। राकेश की रचनाओं का प्रिय विषय है पति-पत्नी सम्बन्ध। राकेश जी के 'अंधेरे बन्द कमरे', 'न आने वाला कल', 'अंतराल' तीन उपन्यास हैं।' न आने वाला कल' उपन्यास में दाम्पत्य जीवन की ऊब, नीरसता और घुटन का चित्रण है। पति-पत्नी अपने-अपने मानदण्डों से बाहर निकलकर जीना नहीं चाहते 'मिस पाल' कहानी में मिस पाल के अकेलेपन व हीनभावना की पीड़ा का चित्रण है। 'सीमाएँ', 'फौलादा का आकाश', 'खाली', 'भूखे', 'चौगान', 'कंबल', 'जंगला', 'नन्ही', 'अपरिचित', 'आखिरी सामान' आदि कहानियों में नारी के मानसिक द्वन्द्व, पीड़ा, घुटन, त्रास का चित्रण किया गया है।

फणीश्वरनाथ रेणु ने अवधारणा में नए आयाम पेश किए हैं। रेणु ने अपनी कथा कहानियों में नारी जीवन संघर्ष, नारी मन की कोमलता, प्रतिभा, सांस्कृतिक समृद्धि आदि के सभी पहलुओं की पड़ताल की है। उदय शंकर भट्ट ने अपने उपन्यास में नारी की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समर्थन किया है। महिलाओं के प्रति उनका रवैया सहानुभूतिपूर्ण है। उनके प्रमुख उपन्यास 'वह जो मैने देखा', 'एक नीड़ दो पंछी', 'नये मोड़', 'लोक-परलोक', 'शेष-अशेष', 'सागर, लहरें और मनुष्य', 'दो अध्याय' इनके प्रमुख उपन्यास हैं। हैं। आजादी के बाद की आज की गांव की हकीकत रामदर्श मिश्रा के श्सुखाते हुए तालाबश में दर्शाई गई है। जहां कोई आदर्श नहीं, कोई मूल्य नहीं, कोई मान्यता नहीं। रात का सफर एक भारतीय महिला के विवाहित जीवन के संघर्षों का एक बेहतरीन चित्रण है। पुरुषों के महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाने से बलिदान होता है। राजेंद्र यादव का उपन्यास स्वतंत्रता युग के दौरान युवाओं के आंतरिक मनोविश्लेषण, संघर्ष, सपने, बेरोजगारी, निराशा, निस्वार्थता और निर्जीवता को दर्शाता है। उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं उखड़े हुए लोग', 'सारा आकाश', 'कुल्टा', 'राह और मात', 'एक इंच मुस्कान', 'अनदेखे अनजाने पुल', 'मंत्रविद्ध' आदि। राजेंद्र यादव की कहानियां आजादी के बाद बिखरते मानवीय मूल्यों, पुरुष-महिला संबंधों की बदलती सामाजिक और नैतिक स्थितियों और उभरते नए दृष्टिकोण को उजागर करती हैं। 'टूटना' कहानी में वर्ग मानदंडों का टकराव है। यादवजी की कुछ कहानियों में कार्य संबंधों के नए संदर्भ हैं। उदाहरण के लिए, 'प्रतिक्षा' में लेसबेनियन स्पर्श होता है और यह एक मध्यम आयु वर्ग की महिला की ग्रंथियों को धीरे से खोलता है।

मन्नू भण्डारी ने भारतीय समाज में स्त्री की दषा एवं दिषा का मार्मिक चित्रण किया है। मन्नू भण्डारी ने अपने कथा साहित्य में स्त्री के जीवन में पुरुष की अनिवार्यता को स्वीकार करती है। वे स्त्री को पति की सहगामिनी के रूप में देखती हैं, अंधानुगामिनी के रूप में नही। ''नारी जीवन में यौन प्रष्नों को लेकर कृष्णा सोबती ने आधुनिक भारतीय पितृसत्तात्मक पारिवारिक-सामाजिक संरचना पर करारा प्रहार किया है।.... इन्होने नारी समस्या को यौन-संबंधों के दायरे में देखने की कोषिष की है तथा परम्परागत यौन नौतिकता के मानदण्डों को पुरुषों का हिमायती माना है।''

निष्कर्ष:

साहित्यकार पुरुष हो या स्त्री महत्व है उसकी सृजनशीलता का परन्तु 'जीवन के रंगमंच' पर प्रत्येक अंक में मुख्य पात्र पुरुष ही होता है स्त्रियों को प्रधाव्य नहीं दिया जाता, न उसकी मान्यताओं एवं धारणाओं को प्रस्तावित शोध का मुख्य उद्देश्य स्त्री की विभिन्न भूमिकाओं के बारे में मानव समाज को परिचय देना है। जीवन के उन अंधेरे कोनों पर भी प्रकाश डालना है, जिसकी पीड़ा स्त्रियों ने सदियों से झेली है। स्त्री की सबसे बड़ी त्रासदी यही है कि उसकी भूमिका हमेशा जरूरतों को ध्यान में रखकर घर में पुरुष और समाज में व्यवस्था तय करती है। यहीं से आरम्भ होती है स्त्री विमर्श की कथा। स्त्री-विमर्श एक ऐसा विमर्श है, जो वर्ग, जाति, वंश, धर्म, प्रांत और देश आदि मर्यादित सीमाओं के परे है।

संदर्भ:

१. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी-मंगल कप्पीकेरे, पृ. १४
२. मंजुला गुप्ता, हिन्दी उपन्यास, समाज और व्यक्ति का द्वन्द्व, पृ. २२५
३. अमृत लाल नागर, बूँद और समुद्र, पृ. २७३
४. प्रेमचन्द के नारी पात्र, डॉ. सिंह, पृ. ७१
५. सिगनेलर, अज्ञेय, पृ. ३२३
६. चौहान वी.पी., रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन, पृ. १२, सं. २००४
७. मुदुला गर्ग, चुकते नहीं सवाल, पृ. ७४
८. ओम प्रकाश शर्मा, समकालीन महिला लेखन, पृ. १४८